ISBN: 978-93-5279-278-8

स्व. प्रो. विवेकदत्त झा

शब्दाञ्जलि

संपादक

डॉ. मंगलानंद झा

संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग छ.ग. शासन, रायपुर के वित्तीय सहयोग से प्रकाशित

पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय

(जन्म – 4 जनवरी 1887, अवसान – 8 नवम्बर 1959)

शुभ कामनाओं सहित सप्रेम भेंट
12/12/2020

शब्दाञ्जलि

प्रो0 (डॉ0) विवेकदत्त झा स्मृति ग्रंथ

आई0एस0बी0एन0 978–93–5279–278–8

संरक्षक

आचार्य प्रो0 (डॉ0) रमेन्द्रनाथ मिश्र

महाकोसल इतिहास परिषद

रायपुर

संपादक

डॉ0 मंगलानंद झा

अध्यक्ष–महाकोसल इतिहासपरिषद, खैरागढ़ इकाई

वित्तिय सहयोग

संचालनालय,संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग

छ0ग0शासन, महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय,रायपुर

शब्दाञ्जलि

(प्रो0 (डॉ0) विवेकदत्त झा स्मृति ग्रंथ)

प्रकाशक : महाकोसल इतिहास परिषद, खैरागढ इकाई

मुद्रक :

ISBN 978-93-5279-278-8

संपादक : डॉ0 मंगलानंद झा

अध्यक्षः महाकोसल इतिहास परिषद, खैरागढ़ इकाई

एवं

सहायक प्राध्यापक

प्राचीन भारतीय इतिहास,संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग

इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़

मो0नं0 94241–11394, ई–मेल jhadrmn99@gmail.com

मूल्यः संस्थागत– 250/-
व्यक्तिगत– 200/-

विशिष्ट आभार : संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, छ0ग0 शासन, रायपुर

अनुक्रमणिका

* शुभकामना संदेशः
प्रोफेसर (डॉ.) माण्डवी सिंह, कुलपति, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय,खैरागढ़ (छ0ग0)
आचार्य प्रोफेसर (डॉ.) रमेन्द्रनाथ मिश्र, संरक्षक, महाकोसल इतिहास परिषद, रायपुर
प्रोफेसर (डॉ.) इन्द्रदेव तिवारी, अधिष्ठाता, कला–संकाय, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़,

प्रो. डॉ. मांडवी सिंह
कुलपति

Prof. Dr. Mandavi Singh
Vice-Chancellor

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय
(संगीत, नृत्य एवं ललित कलाओं का विश्वविद्यालय)
खैरागढ़, छत्तीसगढ़ - 491 881

Indira Kala Sangit Vishwavidyalaya
University Of Music, Dance And Fine Arts
Khairagarh, Chhattisgarh - 491 881

Accredited with grade 'A' by NAAC

शुभकामना संदेश

प्रसिद्ध पुरातत्त्वविद् एवं इतिहासकार स्व. प्रोफेसर डॉ. विवेकदत्त झा की स्मृति में महाकोसल इतिहास परिषद खैरागढ़ इकाई द्वारा श्रद्धांजलि स्वरूप ''शब्दांजलि'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

''शब्दांजलि'' में इतिहास, कला, संगीत, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्त्व आदि विषयों से संबंधित लेखों का समावेश है। इसके प्रकाशन से विद्यार्थी, शोधार्थी एवं अध्येयतागण लाभान्वित होंगे। इस सृजनात्मक प्रयास हेतु संपादक डॉ. मंगलानंद झा को बधाई एवं शुभकामनाएँ ।

(प्रो. मांडवी सिंह)

आचार्य रमेन्द्रनाथ मिश्र
प्रो. (डॉ.) माण्डवी सिंह
कुलपति
(पत्रोपाधि - ध्वनि विज्ञान एवं भारतीय भषाएँ)
एम.ए., पी-एच.डी., डी.लिट्

अध्यक्ष - बख्शी सृजन पीठ, भिलाई-9
पूर्व का. अध्यक्ष - छत्तीसगढ़. राजभाषा आयोग, रायपुर
(छत्तीसगढ़ शासन)

छत्तीसगढ़ साहित्य अकादमी
का. अध्यक्ष
इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय
सम्बद्ध : सुंदरलाल शर्मा शोधपीठ
पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी शोधपीठ
पं. लखनलाल मिश्र, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शोधपीठ
छत्तीसगढ़ शासन उच्च शिक्षा विभागान्तर्गत
पं. रविशंकरशुक्ल विश्वविद्यालय परिसर, रायपुर - 492001 (छ.ग.)
दूरभाष : 0771-2262636
मोबा. : 98271-79479
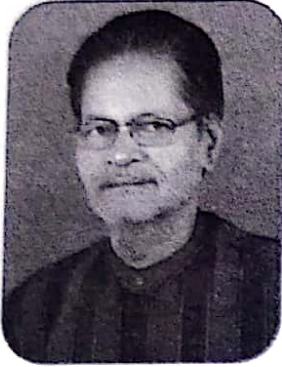
शुभकामना संदेश

"शब्दांजलि" के माध्यम से इतिहास एवं पुरातत्त्व के मूर्धन्य विद्वान प्रो.(डॉ.) विवेकदत्त झा को श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हुए उनके स्मृति में विविध विधाओं से सम्बन्धित लेखो का सुंदर संग्रह है। उन शोध लेखो में लेखकों, विद्वानों एवं शोधर्थियों का लेखन शैली में मौलिकता का छाप दिखाई देता है। मुझे खुशी है कि इसमें शामिल लेख स्तरीय है तथा प्रकाशन योग्य है।

महाकोसल इतिहास परिषद खैरागढ़ इकाई के अध्यक्ष एवं सम्पादक डॉ.मगलानंद झा को अशेष स्नेह एवं बधाई।

(आचार्य रमेन्द्रनाथ मिश्र)
संरक्षक
महाकोसल इतिहास परिषद

प्रो. आई. डी. तिवारी
अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग
अधिष्ठाता, कला संकाय

Prof. I. D. Tiwari
Dean, Faculty of Art

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय
(संगीत, नृत्य एवं ललित कलाओं का विश्वविद्यालय)
खैरागढ़, छत्तीसगढ़ - 491 881

Indira Kala Sangit Vishwavidyalaya
University Of Music, Dance And Fine Arts
Khairagarh, Chhattisgarh - 491 881

Accredited with grade 'A' by NAAC

शुभकामना संदेश

हर्ष का विषय है कि महाकोसल इतिहास परिषद, खैरागढ़ इकाई द्वारा देश के ख्यातिलब्ध पुरातत्त्वविद् स्व. प्रो. विवेकदत्त झा, की पुण्य स्मृति में शब्दांजलि का प्रकाशन किया जा रहा है। प्रस्तुत अभिनव ग्रंथ के माध्यम से उनकी स्मृति शेष को सम्पूर्ण मानव जगत के लिए समर्पित कर सभी के लिए शोधात्मक प्रवृत्ति जागृत करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया गया है। उक्त ग्रंथ के प्रकाशन से निश्चय ही सभी विधा के प्राध्यापकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों, अध्येताओं, जिज्ञासुओं और सामान्य पाठकों को लाभ पहुँचेगा। संपादक डॉ. मंगलानंद झा को कोटिशः बधाई एवं शुभकामनाएँ।

प्रो. आई. डी. तिवारी

प्राक्कथन

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्वं यदक्षरम्।
विवर्त्ततेऽर्थभावेन प्रकिया जगतो यतः।।

भर्तृहरि (वाक्यपदीय / ब्रह्मकाण्ड / प्रथम श्लोक)

(अक्षरों से युक्त शब्दतत्त्व कभी न नष्ट होने वाला साक्षात् ब्रह्म है, जिस प्रकार वेदान्त दर्शन में जगत् ब्रह्म का कार्यरूप अंश है, उसी प्रकार अर्थ भी शब्द का कार्यरूप अंश है।)

प्राचीनकाल में छत्तीसगढ़, दक्षिण कोसल के नाम से प्रसिद्ध था। दक्षिण कोसल के अन्तर्गत सरगुजा, रायगढ़, बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग, राजनांदगॉव, तथा बस्तर के साथ—साथ उड़ीसा राज्य के संबलपुर, बलांगीर एवं कालाहांडी जिलों का भी समावेश था। यह क्षेत्र मैकल, रामगढ़ और सिहावा की पहाड़ियों से आवृत्त है। प्रमुख नदी चित्रोत्पला (महानदी) के अतिरिक्त शिवनाथ, खारून, मनियारी, अरपा, पैरी, लीलागर, हसदो, सोन, खारून, जोंक, शंखिनी—डंकिनी, इन्द्रावती इत्यादी नदियों के जल से यह पावन धरा सिंचित है।

छत्तीसगढ़ की ऐतिहासिक परंपरा कला, संस्कृति, पुरातत्त्व, संगीत, साहित्य आदि अत्यन्त समृद्ध है। विविध विधाओं के अनेक विद्वानों ने अपना सृजनात्मक सहयोग प्रदान कर इस मिट्टी के कर्ज से उऋण होने का प्रयास किया है तथा आगत पीढ़ियों का मार्ग प्रशस्त करने में सहयोग प्रदान किया है। इन्हीं विद्वाानों में से एक प्रो0 (डॉ0) विवेक दत्त झा जी थे। जिन्होंने इस क्षेत्र के इतिहास एवं पुरातत्त्व को उजागर करने में अपना बहुमूल्य समय व योगदान दिया है। वस्तुतः प्रो0 झा जी प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, डॉ0 हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में सेवारत थे। चूंकि आपने प्रारम्भिक शिक्षा जगदलपुर में प्राप्त किया था अस्तु इस क्षेत्र से आत्मिय लगाव था। बस्तर क्षेत्र के पुरातत्त्व एवं कला पर इन्होंने अपनी भरपूर लेखनी चलायी है, जिससे कई रहस्योदघाटन हुए हैं। प्रो0 व्ही0 डी0 झा सतत रुप से छत्तीसगढ़ से जुड़े रहे और आपके नेतृत्व में मल्हार का उत्खनन कार्य भी संपन्न हुआ था। आप इतिहासकार, पुरातत्त्ववेत्ता होने के साथ—साथ वरिष्ठ रंगकर्मी, समीक्षक तथा अभिनय कला में भी निष्णात् थे। आषाढ़ का एक दिन, फरार फौज जैसे नाटकों का कुशल निर्देशन, मंचन एवं अभिनय भी आपने किया। बस्तर का मूर्तिशिल्प नामक पुस्तक आपकी अद्वितीय कृति है। ऐसे उद्भट विद्वान को **शब्दाञ्जलि** के माध्यम से सादर श्रद्धा—सुमन अर्पित करते हैं।

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय की उदारमना विदुषी सम्माननीया कुलपति प्रो० (डॉ०) माण्डवी सिंह जी ने प्रकाशन के लिए सदैव उत्प्रेरित किया है। उनकी प्रेरणा तथा आत्मिक संबल पाकर ही **शब्दाञ्जलि** का प्रकाशन संभव हो सका है। अतः मै आपके प्रति ह्रदय से कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए आभार व्यक्त करता हूँ।

परमआदरणीय आचार्य रमेन्द्रनाथ मिश्र, संरक्षक, महाकोसल इतिहास परिषद,रायपुर तथा कला–संकाय के अधिष्ठाता प्रो० (डॉ०) आई० डी० तिवारी के प्रति भी मै हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने सदैव आगे बढ़कर कार्य करने की प्रेरणा तथा अपेक्षित सहयोग प्रदान किया है। पुनः साधुवाद। संस्कृत विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ० पूर्णिमा केलकर के प्रति मै हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ , जिनका प्रकाशन में परामर्श एवं प्रुफ संबंधित अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ है।

संचालक, संचालनालय, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, छत्तीसगढ़ शासन, रायपुर के प्रति मै कृतज्ञता एवं आभार व्यक्त करता हूँ ,जिन्होंने ग्रन्थ के प्रकाशनार्थ वित्तिय सहयोग प्रदान कर प्रकाशन का मार्ग प्रशस्त किया है। अर्थ के बिना प्रकाशन संभव नही था। पुनः साधुवाद।

स्व० प्रो० व्ही० डी० झा के स्मृति में प्रकाशित **शब्दाञ्जलि** हेतु अनेक विद्वान, लेखकों, मनीषियों, चिंतकों, शोधार्थियों की उत्कृष्ट गवेषणापूर्ण रचनाओं को सम्मिलित किया गया है। उन सभी लेखकों के प्रति विनीत भाव से हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। इस **शब्दाञ्जलि** के बहु आयामी पक्षों को जिज्ञासुओं के समक्ष प्रस्तुत करने में इन सभी विद्वानों का विशिष्ट योगदान है, जिसे विस्मृत नहीं किया जा सकता।

इस ग्रंथ के प्रकाशन विषयक सभी कार्यो में मेरे सहयोगी संविदा शिक्षक डॉ० चैन सिंह नागवंशी का आत्मिय सहयोग प्राप्त हुआ है। इनके सहयोग के बिना प्रकाशन की परिकल्पना को साकार रूप दे पाना संभव नही हो पाता । अतएव इन्हें शुभाशिष देते हुए हार्दिक धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करता हूँ। अंत में, मै उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ , जिनका इस ग्रंथ के प्रकाशन में परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से सहयोग प्राप्त हुआ है।

।। शुभमस्तु ।। जय छत्तीसगढ़

भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी (गणेश)
श्री शुभ संवत् 2076, शक 1941
दक्षिणायने, शरद ऋतौ
02 सितम्बर 2019

(डॉ० मंगलानन्द झा)
संपादक

"अभिलेखीय प्रकाश में लक्ष्मी"

शोधार्थी – मोहन कुमार साहू

भारतीय धर्म में शुभत्व के प्रतीक गणेश और धन तथा ऐश्वर्य की देवी लक्ष्मी सर्वोपरि हैं वे सभी धर्मों, संप्रदायों तथा मतों में पूजनीय हैं। भारतीय कला में लक्ष्मी के विविध रूपों का रूपायन किया गया है, जो आध्यात्म एवं कला की दृष्टि से सर्वाधिक लोकप्रिय था। गज– लक्ष्मी प्रतिमा का निर्माण दो रूपों में किया गया हैं। प्रथमतः लक्ष्मी के दोनों पार्श्व में दो गजों के द्वारा घटाभिषेक करते हुए तथा द्वितीय रूप में चिंघाड़ते हुए। श्री सूक्त में इस देवी को हस्तिनाद प्रमोदिनी अर्थात् हाथियों के चिंघाड़ से प्रसन्न होने वाली कहा गया हैं। लक्ष्मी जी का यह रूप इतना अधिक लोकप्रिय हुआ कि अनेक देशी–विदेशी शासकों ने इसे अपनी मुद्राओं में स्थान दिया। लक्ष्मी को समृद्धि, सौभाग्य और सौन्दर्य का प्रतीक माना गया है तथा श्री, पद्म, कमला आदि कई नामों से संबोधित किया गया हैं। महाकाव्यों में श्री और लक्ष्मी दो अलग–अलग देवियों के रूप में वर्णित हैं। पुराणों के समय तक श्री, लक्ष्मी और विष्णु का संबंध पूरी तरह स्थापित हो चुका था विष्णुधर्मोत्तर पुराण में अष्टदल कमल से युक्त सिंहासन पर विराजमान लक्ष्मी के चार हाथों में सनाल, पद्म, अमृत घट, बिल्वफल और शंख का उल्लेख हैं। ग्रंथ में दो गजों द्वारा जल कलशों से देवी के अभिषेक का भी निर्देश हैं।

छत्तीसगढ़ के शिल्पकारों ने लक्ष्मी के विविध रूपों का रूपायन कुशलता पूर्वक किया हैं। कहीं–कहीं शिल्पकार ने सौंदर्यबोध के साथ–साथ प्रतिमाओं के माध्यम से दार्शनिक तत्वों को भी उजागर किया हैं। लक्ष्मी की उपर्युक्त विशेषता युक्त अनेक प्रतिमाएँ अंचल के विभिन्न कला केन्द्रों सिरपुर, मल्हार, रतनपुर, ताला, डीपाडीह, चन्द्रखुरी, भड़भड़ी, इत्यादि से प्राप्त हुए हैं छ.ग. से प्राप्त विभिन्न अभिलेखों में लक्ष्मी का वर्णन प्राप्त होता हैं।

1. **शरभपुरीय राजा नरेन्द्र का कुरूद से प्राप्त ताम्रपत्र** – इस ताम्रपत्र की प्राप्ति रायपुर जिले के अन्तर्गत कुरूद नामक ग्राम से हुई हैं। इसके खोजकर्ता डॉ. सन्तलाल कटारे और डॉ. मोरेश्वर दीक्षित हैं। यह ताम्रपत्र लेख महाराज नरेन्द्र ने अपने शासन काल के 24 वें वर्ष में उत्कीर्ण करवाया था। जिसकी लिपि पेटिका शीर्षक अक्षरों वाली ब्राम्ही लिपि हैं। महाराज नरेन्द्र के द्वारा केशवक नामक ब्राह्मण को ग्राम दान में दिया गया था, जिसका उल्लेख इस ताड़ पत्र में किया गया था और ब्राम्हण के घर में

आग लग जाने से ताड़पत्र जल गया फिर सचिवालय से जांच करने के पश्चात् पुनः ताम्रपत्र पर उल्लेख किया। ताम्रपत्र में गोल छिद्रयुक्त राजमुद्रा में कमल पर खड़ी हुई राजलक्ष्मी की प्रतिमा उत्कीर्ण है, जिसके पार्श्व में गज को कलश लिए अभिषेक करते हुए दिखाया गया हैं।

2. **शरभपुरीय राजा जयराज का आरंग से प्राप्त ताम्रपत्र** – इस ताम्र पत्र में बांयी हासिये में निर्मित छिद्र में गोला कृति में छल्ला पिरोया गया है, जिसके दोनों छोर पर राजमुद्रा अंकित हैं जहां पूर्ववत् राजलक्ष्मी की आकृति हैं। इस ताम्रपत्र की लिपि पेटिकाशीर्षक अक्षर वाली ब्राम्ही लिपि है और भाषा संस्कृत हैं परम भागवत राजा ने अपने शासन काल के पांचवे वर्ष में इस ताम्रपत्र को उत्कीर्ण करवाया हैं।
3. **राजा सुदेवराज का ताम्रपत्र** – रायपुर से 185 किलोमीटर की दूरी पर खरियार स्थित हैं। इस ताम्र पत्र को प्रकाश में लाने का श्रेय स्टैन कोनों को जाता हैं। जिसकी भाषा व लिपि क्रमशः पेटिका शीर्षक अक्षरों वाली ब्राम्ही लिपि व संस्कृत भाषा हैं सुदेवराज अपने शासन काल के दूसरे वर्ष में यह ताम्रपत्र उत्कीर्ण करवाया था। जिसमें नवन्नक और शाम्बिलक नामक दोनों ग्रामों को वाजसनेय शाखा के कौशिकगोत्रीय विष्णु स्वामी को दान दिया गया था। इस ताम्रपत्र में हासिये से छेदकर उसमें गोल छल्ला लगाया गया है, जिसमें गोलाकार स्वरूप में गजलक्ष्मी की आकृति हैं।
4. **सुदेवराज का आरंग से प्राप्त ताम्रपत्र लेख** – इस ताम्रपत्र में गोल छेद कर मध्य में मुद्रा ढालकर लगाया गया हैं। इस मुद्रा के आधे भाग में गजलक्ष्मी की प्रतिमा हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं शरभपुरीय राजाओं की मुद्रा में गजलक्ष्मी की आकृति प्राप्त होती हैं। यह ताम्रपत्र शासन के आठवें वर्ष का हैं।
5. **मल्लार से प्राप्त प्रवरराज ताम्रपत्र लेख–** बिलासपुर से 26 किलो मीटर दूर बसे मल्लार नामक ग्राम के खेत से प्राप्त किया गया। जिसको बिलासपुर के तहसीलदार के द्वारा संग्रह किया गया। इस लेख में पूर्ववत् पेटिका शीर्षक अक्षरों वाली ब्राम्ही लिपि है व भाषा संस्कृत हैं इस लेख को प्रवरराज ने अपने शासन काल के तीसरे वर्ष में उत्कीर्ण करवाया थां इसकी राजमुद्रा पर गजलक्ष्मी की आकृति हैं।
6. **सोमवंशी राजा महाभावगुप्त जनमेजय का ताम्रपत्र** – इस ताम्रपत्र का प्राप्ति स्थल ज्ञात नहीं हैं सोमवंशी राजा प्रथम महाभवगुप्त

(जिसकी उपाधि जनमेजय है) ने अपने शासन काल के आठवें वर्ष में कार्तिक सुदी द्वादशी को मुरसीमा से दिया था। इसमें सतल्लभा नामक ग्राम को ब्राम्हणों को दान दिये जाने की बात कही गई हैं। इस ताम्रपत्र में भी गोल छेद कर उसमें छल्ला पिरोया गया है। जिसके निकट ही राजमुद्रा से जड़े हुये राज मुद्रा में गजलक्ष्मी की बैठी हुई प्रतिमा बनी हैं। इससे पता चलता है कि सोमवंशी राजाओं की आराध्य देवी गजलक्ष्मी रही होगीं इस लेख की लिपि एवं भाषा क्रमशः नागरी व संस्कृत हैं।

7. **कलचुरि शासक पृथ्वीदेव द्वितीय का डैकोनी से प्राप्त ताम्रपत्र–** जांजगीर जिला के डैकोनी नामक गांव से प्राप्त हुआ था। इस ताम्रपत्र को वेंकटरामैया और महामहोपाध्याय वासुदेव विष्णु मिराशी ने प्रकाशित किया था। इस ताम्रपत्र में छेद करके, राजमुद्रा गोल आकृति में जड़ा है, जिसमें उपरले भाग में गजलक्ष्मी की प्रतिमा हैं। नीचे दो पंक्ति में राजा श्री मत्पृथ्वीदेव लिखा हैं। यह लेख नागरी लिपि में है व भाषा संस्कृत हैं।
8. पृथ्वीदेव द्वितीय का ही बिलैगढ़ से प्राप्त ताम्रपत्र में एक–एक छेद है, जिसमें छल्ले लगे हुये हैं और छल्ले से जुड़ी हुई राजमुद्रा के ऊपरी भाग में गजलक्ष्मी की प्रतिमा हैं। उसके नीचे दो पक्तियों में राजा श्रीमत्पृथ्वी देव लिखा हैं।
9. पृथ्वीदेव द्वितीय का एक अन्य ताम्रपत्र घोटिया रायपुर जिले के बलौदा बाजार तहसील से प्राप्त किया गया। यह ताम्रपत्र घोटिया नामक गांव के एक खेत में प्राप्त हुआ था। पूर्वोल्लिखित की तरह इस ताम्रपत्र में भी पृथ्वीदेव की मुद्रा पर गजलक्ष्मी की आकृति है और नीचे दो पंक्ति में राजा श्रीमत्पृथ्वी देव उत्कीर्ण हैं। जिसकी लिपि नागरी व भाषा संस्कृत हैं।
10. रतनपुर के कलचुरि शासक पृथ्वीदेव द्वितीय का अमोदा नामक गांव से प्राप्त ताम्रपत्र में लगे हुये राजमुद्रा के ऊपरी भाग में गजलक्ष्मी की प्रतिमा है और नीचे राजा का नाम लिखा हैं। अमोदा गांव जांजगीर तहसील के अंतर्गत आता हैं। इस ताम्रपत्र लेख का प्रकाशन रायबहादुर डॉ.हीरालाल एवं महामहोपाध्याय वासुदेव विष्णुमिराशी ने संयुक्त रूप से किया हैं। प्राप्त ताम्रपत्र की लिपि व भाषा क्रमशः नागरी लिपि एवं संस्कृत हैं। कलचुरि शासक के संवत् 905 की आश्विन सुदी 6, मंगलवार को लिखा गया हैं। जिसको जड़ेर गांव के कीर्तिधर के बेटे बल्लभराज ने लिखा और चान्द्रार्क ने उत्कीर्ण किया थां जड़ेर जांजगीर तहसील की सीमा से 7 किलो मीटर दूर शिवनाथ नदी के तट पर बसा जोंडरा हो

सकता हैं। एक और शिलालेख रतनपुर के किले के बादल महल से प्राप्त हुआ हैं। जिसका प्रकाशन सर रिचार्ड जोकिन्स ने एशियाटिक रिसर्चेस में किया हैं ।लिपि नागरी है व भाषा संस्कृत हैं। इस ताम्रपत्र के तीसरे लेख में लक्ष्मी जी द्वारा विष्णु की चरण चम्पन करने की बात कही गई हैं।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. जैन बालचन्द्र, परिवर्धन रायकवार जी.एल.सिंह, राहुल कुमार उत्कीर्ण लेख, 2005, संचालनालय, संस्कृति एवं पुरातत्व रायपुर (छ.ग.)
2. झा, मंगलानंद, दक्षिण कोसल के कलचुरि कालीन मंदिर, रायपुर (छ.ग.)
3. झा, मंगलानंद, इतवारी अखबार–रायपुर, 1 सितम्बर 2013, पृ. 24–25
4. अग्रवाल, वासुदेव शरण, भारतीय कला, पृथ्वी प्रकाशन, वाराणसीं
5. मिश्र इन्दुमति–प्रतिमा विज्ञान, मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपालं

मोहन साहू, शोधार्थी,
प्रा.भा.इति.सं. एवं पुरा. विभाग,
इ.क.सं.विवि. खैरागढ़